* श्री अरविन्द घोष *

श्री अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन करें।

जीवन परिचय :- श्री अरविन्द घोष का जन्म 15 अगस्त 1872 ई० को ~~कोल~~ कोलकता नगर के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था उनके पिता डॉ० कृष्णधन घोष कोलकता के प्रसिद्ध सिविल सर्जन थे और उन्होंने इंग्लैण्ड में चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया था, अत: वे पाश्चात्य संस्कृति के रंग में पूर्णत: रंगे हुए थे। उनकी माता का नाम स्वर्णलता देवी था। प्रारम्भिक शिक्षा दार्जिलिंग में प्राप्त करने के उपरान्त उन्हें सात वर्ष की अल्प आयु में ही शिक्षा अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। उन्होंने वहाँ चौदह वर्ष तक विद्याध्ययन किया। वहाँ रहते हुए श्री अरविन्द घोष ने ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन तथा इटालियन भाषाओं का अध्ययन किया। 18 वर्ष की आयु में ही श्री अरविन्द ने सन 1890 में भारतीय सिविल सर्विस की परिक्षा उतीर्ण की और सन 1893 ई० में अरविन्द घोष भारत वापस चले आये और सन 1906 तक बड़ौदा नरेश की सेवा में 13 वर्ष तक रहे और वहाँ पर उन्होने संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

श्री अरविंद घोष के जीवन दर्शन

श्री अरविंद घोष ने अपने जीवन को आध्यात्मिक और धार्मिक चिंतन से जोड़ा और योग साधना के द्वारा ईश्वर के दर्शन किये। उनके अनुसार आध्यात्मिकता ही मनुष्य की कुंजी है। मनुष्य के जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिकता का विकास करना होना चाहिए। अरविंद घोष वेदों और योग शक्ति में पूर्ण विश्वास रखते थे।

श्री अरविंन्द के अनुसार जीवन विश्व शक्ति का एक स्वरूप है जो सदैव क्रियाशील रहती है। श्री अरविन्द घोष गीता में विश्वास रखते है व गीता के कर्म सिद्धान्त में भी विश्वास करते है। उनके अनुसार मनुष्य जैसा कर्म करेगा, तदनुसार ही वह पुनर्जनम प्राप्त करता है।

श्री अरविंद घोष का शिक्षा दर्शन

श्री अरविन्द घोष ने भारतीय शिक्षा चिंतन में महत्वपूर्ण योगदान किया। उन्होने सर्वप्रथम घोषणा की कि मानव संसारिक जीवन में भी दैवी शक्ति प्राप्त कर सकता है। उन्होने 12 फरवरी से 2 अप्रैल 1910 साप्ताहिक पत्र 'कर्मयोगी' में प्रकाशित किये। इन लेखों को संकलित कर वर्तमान समय में कलकत्ता के

'आर्य पब्लिशिंग हाउस' ने राष्ट्रीय शिक्षा की एक पद्धति के रूप में प्रकाशित किया है जो संक्षिप्त में निम्नलिखित है :-

मस्तिष्क का स्वरूप -

श्री अरविन्द घोष के अनुसार समस्त प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का श्रेय केवल मस्तिष्क को है। श्री अरविन्द घोष के सत्यानुकूल मस्तिष्क को चार भागों में विभाजित करते हैं जो निम्नलिखित है :-

i) चित :- यह समस्त मानसिक क्रियाओं का आधार है जो व्यक्ति की स्मरण शक्ति को प्रभावित करता है।

ii) मानस :- यह मस्तिष्क का दूसरा भाग है सभी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ मानस से संबंधित होती है। मानस ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान को मानसिक प्रभावों में परिवर्तित करता है।

iii) बुद्धि :- यह मस्तिष्क का तीसरा रूप है, बुद्धि मानस स्तर पर प्राप्त ज्ञान का संकलीकरण, वर्गीकरण, समन्वय, विश्लेषण आदि कार्य भी करती है।

iv) चेतना :- यह मस्तिष्क का सर्वोपरि एवं सर्वोच्च स्वरूप है। चेतना ही मनन तथा चिंतन करने की क्षमता है। जिसके द्वारा व्यक्ति मनुष्यत्व से ऊपर उठकर ईश्वर के निकट जाता है।

·अरविंद घोष का शिक्षा दर्शन हमें सही शिक्षा का निर्देश करता है।

शिक्षा का अर्थ

श्री अरविंद घोष के अनुसार सच्ची एवं वास्तविक शिक्षा वही है जो व्यक्ति तथा बालक छिपी हुई शक्तियों के विकास में सहायक हो तथा व्यक्ति के जीवन अन्तःकरण एवं आत्मा में समुचित संबंध स्थापित कर सके। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कुछ भाव और प्रवृतियाँ होती है जिसे हम शिक्षा के माध्यम से इन प्रवृतियों को विकसित कर आगे बढ़ाये। शिक्षा वही है जो व्यक्ति की इस आंतरिक आत्मा तथा ईश्वरीय चेतना व्यक्ति का विकास करे। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति ईश्वर की इस चेतन शक्ति को अपने अंदर खुला सकता है। हमें शिक्षा द्वारा मस्तिष्क का विकास करना चाहिए।

शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त
(Basic principles of education)

श्री अरविन्द घोष के अनुसार शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं —

1. शिक्षा बालक - प्रधान होनी चाहिए।
2. शिक्षा को बालक में छिपी हुयी शक्तियों का विकास करना चाहिए।

3. शिक्षा से बालक की शारीरिक शुद्धि करनी चाहिए।
4. शिक्षा से ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए।
5. शिक्षा का आधार ब्रह्मचर्य होना चाहिए।
6. शिक्षा में धार्मिक पुट अवश्य होना चाहिए।
7. शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।
8. शिक्षा बालक की मनोवृत्तियों तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुसार होनी चाहिए।
9. शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का विकास करके पूर्ण मानव बनाना चाहिए।

शिक्षा के उद्देश्य
(Object of Education)

श्री अरविन्द घोष के अनुसार शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिए :-

i) बालक का उत्तम शारीरिक विकास करना।
ii) बालक का चारित्रिक विकास करना तथा बालक के अंतः करण का शुद्धिकरण
iii) बालक की विभिन्न इन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों का समुचित विकास करना।
iv) बालक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
v) बालक में नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिकता का विकास करना।

शिक्षा का पाठ्यक्रम
(Curriculum of Education)

श्री अरविन्द घोष ने शिक्षा में बालक के आध्यात्मिक भौतिक, चारित्रिक तथा मानसिक विकास को काफी महत्व देते है। इसके लिए वे निम्नांकित पाठ्यक्रम प्रस्तावित करते है :-

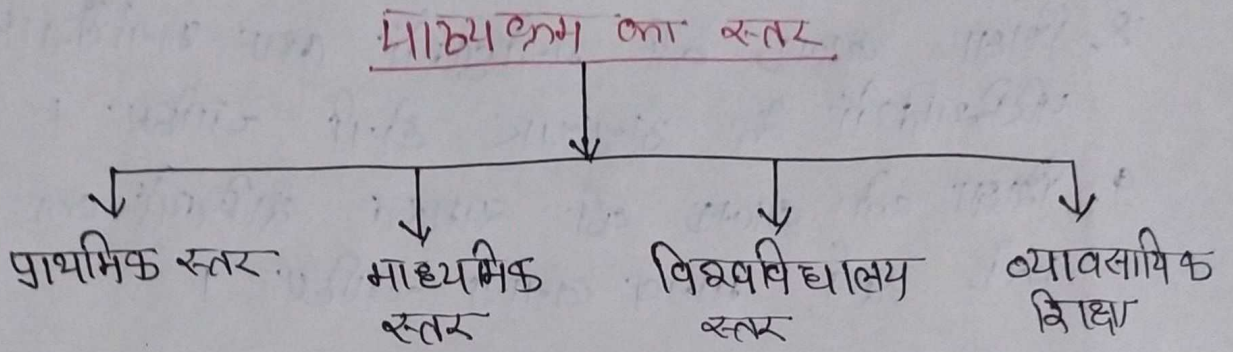

1. प्राथमिक स्तर (primary stage) → मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, राष्ट्रीय इतिहास, चित्रकला, सामान्य विज्ञान, सामाजिक - अध्ययन तथा गणित।
2. माध्यमिक स्तर (secondary stage) → मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, गणित, कला, रसायन विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, वनस्पति - विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक-विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान।
3. विश्वविद्यालय स्तर (University Stage) → भारत तथा पाश्चात्य दर्शन, सभ्यता का इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच साहित्य, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, विज्ञान का इतिहास, गणित, रसायन - शास्त्र,

भौतिक - शास्त्र, जीव - विज्ञान, विश्व एकीकरण तथा अन्तर्विद्रीय सम्बन्ध ।

5. **व्यवसायिक शिक्षा (vocational Education) :-** चित्रकारी फोटोग्राफी, सिलाई, सूची शिल्प कार्य, शिल्प कला सम्बन्धी ड्राइंग, टंकण, आंशु - लिपि, कुटीर - उद्योग, काष्ठ कला, सामान्य मैकेनिकल तथा इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग उपचारण, भारतीय तथा यूरोपीय - संगीत, अभिनय तथा नृत्य ।

शिक्षण विधि (Teaching method)

श्री अरविंद घोष ने निम्नलिखित शिक्षण विधियों पर बल दिया है।

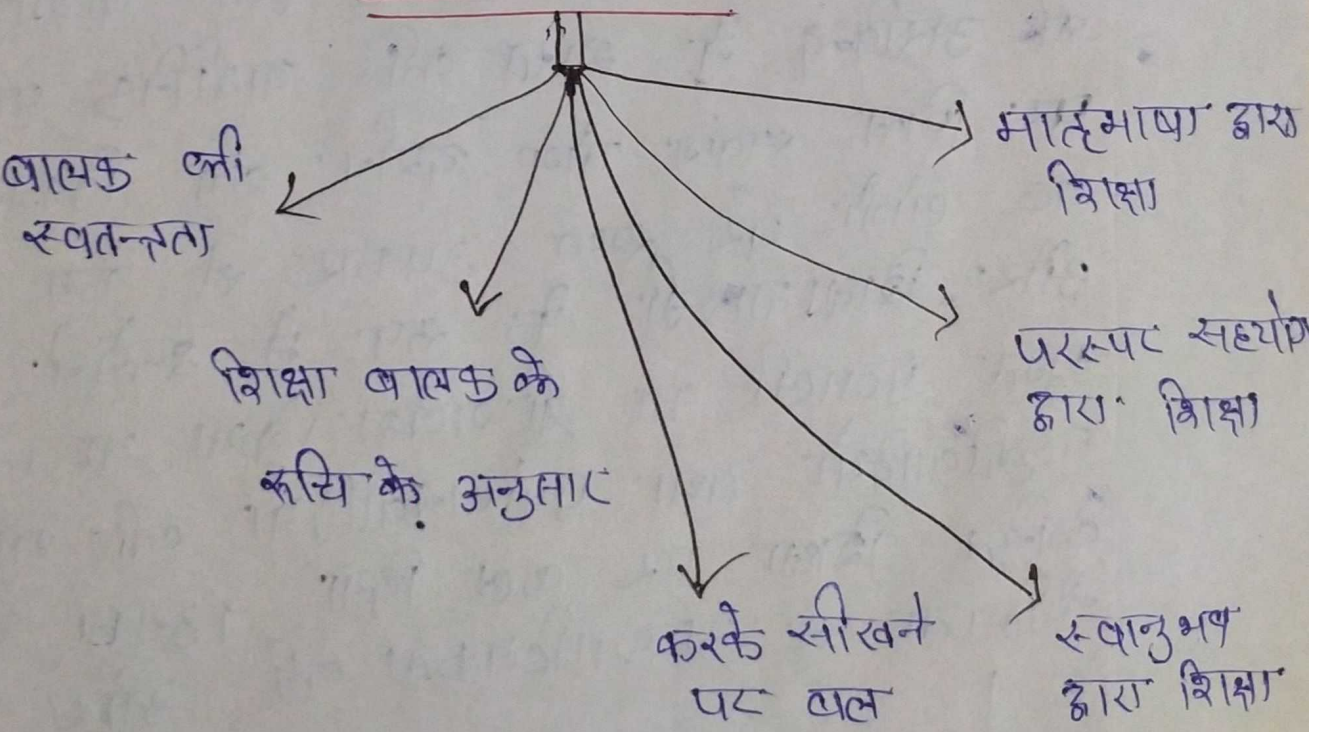

शिक्षक एवं शिक्षण

श्री अरविन्द घोष कहते है " शिक्षक कोई निर्देशन या स्वामी नही है वह तो सहायक व पथ प्रदर्शक है, उसका कार्य सुझाव देना है न कि बालक के ऊपर ज्ञान के बोझ को लादना है।"

श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा में बालक को केन्द्रिय स्थान प्राप्त होना चाहिए शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालक की रुचि, क्षमता, प्रकृति, प्रवृति तथा स्वभाव के अनुसार शिक्षा प्रदान करे।

निष्कर्ष $\frac{0}{0}$ उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एक दार्शनिक रूप में श्री अरविन्द ने भारत की दार्शनिक पृष्ठभूमि पर जिस सर्वांग योग दर्शन का विकास किया है वह लोगों पर एक उपकार से कम नही है और शिक्षाशास्त्री के रूप में इन्होंने शिक्षा की मुक्त प्रणाली का श्री गणेश किया था। इन्होने प्रकृतिवादियों तथा प्रयोजनवादियों की भाँति बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया। उनका दर्शन भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर ले जाता है।